प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2020- 21 विषय- हिंदी (ऐच्छिक) कक्षा- 12
अंक योजना

निर्धारित समय- 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देश:-

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है|
- खंड-अ में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए|
- खंड-ब में वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं| ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं|
- यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ|
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए|

	खंड – अ **वस्तुपरक- प्रश्नों के उत्तर**	
प्रश्न क्रम संख्या	**उत्तर**	**निर्धारित अंक विभाजन**
प्रश्न1.	**प्रश्न संख्या 1 में दिए गए गद्यांश-I पर आधारित प्रश्नों के उत्तर:-**	**10x1=10**
(i)	III. शिक्षकों के हाव भाव स्मृति पटल पर स्थायी प्रभाव छोड़ देते हैं|	1
(ii)	II. किसी कार्य शैली की कमियों को बढ़ा चढ़ा कर उजागर करना चाहते हैं|	1
(iii)	I. संस्मरण की अनदेखी बंद हो गई है|	1
(iv)	III. ताकि पेचीदा सवालों या सामाजिक मुद्दों पर नए और सार्थक दृष्टिकोणों द्वारा शिक्षण प्रदान किया जा सके।	1
(v)	III. बच्चे इस का अंदाजा नहीं कर पाते की कि उनके किस कार्य से क्या हो सकता है|	1
(vi)	II. संस्मरण की विधा को प्रसिद्धि मिलना व जगह-जगह इसकी चर्चा होना।	1
(vii)	I. संस्मरण विधा का वर्तमान हिंदी साहित्य में स्थान		1
(viii)	II. अतीत और वर्तमान के बीच देखने वाले की दृष्टि और परिप्रेक्ष्य बदल जाता है।	1
(ix)	III. जीवन घटनाओं की वह जानकारियाँ देना जो जीवन के महत्वपूर्ण मुद्दों को गहराई से समझने में मदद कर सकती हैं।	1
(x)	IV. यादें होने से हम जीवन के वो महत्वपूर्ण सबक सीखते हैं जिनका हम भविष्य में उपयोग जीवन	1

	सुधार सकते हैं।क्या छात्र अपने ज्ञान को तार्किक रूप से लागू कर सकते हैं?	
	अथवा	
	प्रश्न संख्या 1 में दिए गए गद्यांश-II पर आधारित प्रश्नों के उत्तर:-	**10X1=10**
(i)	III. लेखक उनके पश्चात हंस को गुणवत्ता में बिना कोई समझौता किये चलाएगें।	1
(ii)	III. हिंदी संसार द्वारा प्रगतिशील, क्रन्तिकारी व समाजवादी साहित्य की अवहेलना।	1
(iii)	II. वह अपने बच्चों से अत्यधिक प्रेम करते थे।	1
(iv)	II. शहीद कभी समझौता नहीं करते पर वे झुकने को तैयार थे।	1
(v)	III. हिंदी संसार से उन्हें ऐसा अनुभव हुआ था कि वे किसी भी हद तक झुकने को भी तैयार थे।	1
(vi)	IV. तन बीमार पर मन निश्छल था।	1
(vii)	III. पत्र साहित्य का नाम।	1
(viii)	III. स्थिरता से।	1
(ix)	II. हिंदी संसार का अधूरा शहीद।	1
(x)	II. वह शब्दों से कम परन्तु भावों से अधिक बात कर रहे थे।	1
प्रश्न2.	**प्रश्न संख्या 2 में दिए गए पद्यांश-I पर आधारित प्रश्नों के उत्तर:-**	**8X1=8**
(i)	IV. चित्त भ्रांत कर अंड- बंड बकने पर मजबूर कर सकते हैं।	1
(ii)	I. इंसान का अस्तित्व उसकी सोच व भावनाएं अब एक आंकड़ा मात्र रह गयी हैं।	1
(iii)	I. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।	1
(iv)	I. आंकड़े इतने अधिक थे कि दिमाग उन्हें स्वीकार नहीं कर रहा था।	1
(v)	II. तादाद द्वारा जनित उत्तेजना प्राणनाशक हो सकती है।	1
(vi)	II. बड़ी मात्रा में तथ्य लोगों का दिमाग़ ख़राब कर देते हैं।	1
(vii)	I. पैदाइशी हक़ दिए जाएँ।	1
(viii)	III. आँकड़े बहुत ज़्यादा हैं, सत्य कम।	1
	अथवा	
प्रश्न2.	**प्रश्न संख्या 2 में दिए गए पद्यांश-II पर आधारित प्रश्नों के उत्तर:-**	**8X1=8**

(i)	I. कवि का जिससे सामना हुआ कवि उससे मिलने में डर रहा था|	1
(ii)	IV. पृथकत्व|	1
(iii)	II. अदक्षतायें|	1
(iv)	III. आभापूर्ण स्नेह|	1
(v)	III. कवि को अपनी क्षुद्रता का अनुभव हो गया था|	1
(vi)	III. एकांत में सत्य की अनुभूति से|	1
(vii)	I. एकांत में स्वयं से सामना होने के कारण|	1
(viii)	I. धोखा|	1
प्रश्न3.	**विकल्पों का चयन कीजिए:-**	**5X1=5**
(i)	III. प्रिंट|	1
(ii)	II. टीवी-रेडियो-समाचारपत्र|	1
(iii)	II. इससे खबरें बहुत तीव्र गति से पहुँचाई जाती हैं|	1
(iv)	III. स्वतंत्र पत्रकार|	1
(v)	III. क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों, कैसे|	1
प्रश्न4.	**(पद्यांश) विकल्पों का चयन कीजिए:-**	**5X1=5**
(i)	IV. जीवन के अवरोधों को|	1
(ii)	III. धर्म- जाति|	1
(iii)	II. मन|	1
(iv)	I. सृजन	1
(v)	IV. अधूरी रचना होगी|	1
प्रश्न5.	**(गद्यांश) विकल्पों का चयन कीजिए:-**	**5X1=5**
(i)	IV. रिश्तों में|	1
(ii)	II. भारत की|	1
(iii)	IV. मनुष्य और प्रकृति का संबंध|	1

(iv)	III. पर्यावरण और मनुष्य का संबंध।	1
(v)	IV. संस्कृति से।	1
प्रश्न6.	**(पूरक पाठ्य-पुस्तक) विकल्पों का चयन कीजिए:-**	**7X1=7**
(i)	II. चूल्हे की आग बुझा देना।	1
(ii)	III. पर्यटन करने वाला।	1
(iii)	II. भूपदादा का बेटा।	1
(iv)	I. पर्वतीय लोगों की संघर्षमयी ज़िंदगी।	1
(v)	IV. बच्चों के प्रति सतर्क रहने से।	1
(vi)	IV. कुमुद।	1
(vii)	II. नदियां दूषित हो रहीं हैं।	1

	खंड 'ब' **वर्णनात्मक प्रश्नों के संभावित उत्तर संकेत**	
प्रश्न क्रम संख्या	**उत्तर**	**अंक विभाजन**
प्रश्न7.	**किसी *एक* विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए:-** भूमिका - 1 अंक विषयवस्तु - 3 अंक भाषा - 1 अंक	**5x1=5**
प्रश्न8.	2 **में से किसी** 1 **विषय पर पत्र (लगभग 80-100 शब्द-सीमा)** आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ - 1 अंक विषयवस्तु - 3 अंक भाषा - 1 अंक	**5x1=5**
प्रश्न9.	**प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए:-**	**3+2-=5**
(i)	रेडियो संचार का एक तरफ़ा माध्यम है। इसलिए, संदेशों के संबंध में कोई प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं की जा सकती है। चूंकि श्रोता का ध्यान केवल ध्वनि पर होता है, इसलिए रेडियो के माध्यम से संचारित संदेश केवल उन लोगों तक पहुंच सकते हैं जो ध्यानपूर्वक और बुद्धिमानी से सुनते हैं। रेडियो से संदेश प्राप्त करने के लिए बहुत चौकस रहना पड़ता है अन्यथा संदेश का कुछ एक	3

	हिस्सा ही याद रहता है। रेडियो में टेलीविजन द्वारा प्रदान की गई चित्रात्मक गुणवत्ता का अभाव है। प्रतिक्रिया तंत्र की कमी को निम्नलिखित तरीके से दूर किया जा सकता है***:-*** नेटवर्किंग में रेडियो के उपयोग को मजबूत करने के लिए संस्थागत और सामुदायिक स्तर पर श्रोता मंच स्थापित किये जा सकते हैं जो लोगों की विभिन्न कार्यक्रमों पर प्रतिक्रियाएं लेकर श्रोताओं पर अनुसंधान के लिए डेटा प्रदान कर सकते हैं और प्रोग्रामिंग को और अधिक सार्थक बना सकते हैं। प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने और क्षेत्र-आधारित विकास कार्यक्रमों के उत्पादन में सहायता करने के लिए विशेषज्ञों को रेडियो स्टेशनों से संलग्न किया जा सकता है। --- ***अथवा*** कविता भाषा में होती है, इसलिए भाषा का सम्यक ज्ञान ज़रूरी है। भाषा शब्दों से बनती है। शब्दों का एक विन्यास होता है जिसे वाक्य कहा जाता है। भाषा प्रचलित एवं सहज हो पर संरचना ऐसी कि पाठक को नयी लगे। कविता में संकेतों का बड़ा महत्त्व होता है। इसलिए चिन्हों (,') यहाँ तक कि दो पंक्तियों के बीच का खाली स्थान भी कुछ कह रहा होता है। वाक्यगठन की जो विशिष्ट प्रणालियाँ होती हैं, उन्हें शैली कहा जाता है। इसलिए विभिन्न काव्य शैलियों का ज्ञान भी ज़रूरी है। छंद के अनुशासन की जानकारी से होकर गुज़रना एक कवि के लिए ज़रूरी है। तभी आंतरिक लय का निर्वाह संभव है। कविता छंद और मुक्त छंद दोनों में होती है। छंदोबद्ध कविता के लिए छंद के बारे में बुनियादी जानकारी आवश्यक है ही, मुक्त छंद में लिखने के लिए भी इसका ज्ञान ज़रूरी है। कविता समय विशेष की उपज होती है उसका स्वरूप समय के साथ-साथ बदलता रहता है। अतः किसी समय विशेष की प्रचलित प्रवृत्तियों की ठीक-ठीक जानकारी भी कविता की दुनिया में प्रवेश के लिए आवश्यक है। कम से कम शब्दों में अपनी बात कह देना और कभी-कभी तो शब्दों या दो वाक्यों के बीच कुछ अनकही छोड़ देना कवि की ताकत बन जाती है।	
(ii)	***कहानी और नाटक में समानताएँ***:- मानक तत्व साहित्य के अधिकांश रूपों की तरह, नाटक और कथाएँ कथानक, परिस्थितियां और द्वंद्व जैसे तत्वों को साझा करते हैं। कहानी में परिस्थिति को कभी-कभी स्पष्ट रूप से प्रकट किया जाता है, लेकिन अक्सर एक समय में इसके एक अंश का ही पता चलता है, जैसे कि चरित्र का उल्लेख, समय, या स्थान का मौसम। नाटक में, परिस्थितियां पाठकों के लिए मंच निर्देशन करने के लिये बताई जाती हैं और दर्शकों को यह पृष्ठभूमि और वेशभूषा के साथ-साथ बोली जाने वाले संवादों से ज्ञात होती है।	2

	नाटकीय रूपांतर नाटक और कथा दोनों ही चरित्र और कथानक को प्रकट करने के लिए नाटकीयता का उपयोग करते हैं। कहानियों में नाटक के सामान संवाद और एक्शन होते हैं। चरित्र निर्माण कहानी और नाटक दोनों में पात्रों के चरित्र का न्यूनतम वर्णन और स्पष्टीकरण होता है। पात्र अपने संवादों से अपना चरित्र निर्माण करते हैं। प्रकटीकरण और व्याख्या कथाओं और नाटकों दोनों में, स्पष्टीकरण, पृष्ठभूमि और प्रेरणा आदि को खोजने और तय करने की ज़िम्मेदारी दर्शक या पाठक की होती है क्योंकि यह सब कुछ स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया होता है। प्रत्येक दर्शक या पाठक खुद के लिए कहानी/नाटक की व्याख्या करता है और एक ही नाटक को देखने या एक ही कहानी को पढ़ने वाले किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में उसके अनुभव अलग हो सकते हैं। --- ***अथवा*** --- **कहानी और नाटक में अंतर:-** नाटक कृत्यों और दृश्यों के माध्यम से मंचित किया जाता है। इसमें कथानक, परिस्थितियाँ, स्पष्टीकरण आदि स्वतः स्पष्ट होते हैं। प्रत्येक पात्र के संवाद अलग-अलग लिखे होते हैं। नाटक अभिव्यक्ति केंद्रित तथा भावप्रधान होते हैं तथा कलाकारों की अभिव्यक्ति कला,संवाद-सम्प्रेषण, आवाज आदि इसमें प्रमुख भूमिका अदा करती हैं। अभिनय द्वारा किसी भाव, घटना, सामाजिक राय आदि प्रस्तुत की जाती हैं| नाटक में सभी प्रकार के चरित्रों का समावेश होता है, जैसे- नायक-नायिका, खलनायक, लघुचरित्र इत्यादि। कहानी वह रचना होती है, जिसे कक्षा में भी सुना सकते हैं अथवा लिख भी सकते हैं| कहानी प्रायः कथन बहुल होती है परन्तु कहीं-कहीं इसमें संवाद भी सम्मिलित किये जाते हैं। इसमें कथन के माध्यम से पात्रों का चरित्र विकास किया जाता है। इसमें साहित्यिक उपकरणों का उपयोग उदारता-पूर्वक किया जाता है। इसकी विषय-वस्तु कथानक के इर्द-गिर्द बुनी होती है तथा इसमें कथन के माध्यम से परिस्थितियाँ का वर्णन किया जाता है।	
प्रश्न10.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए:-**	**3+2=5**
(i)	यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह शैली कहानी या कथा लेखन की शैली के ठीक उलटी है जिसमें क्लाइमेक्स बिल्कुल आखिर में आता है। इसमें	3

	किसी घटना विचार या समस्या के सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों या जानकारी को सबसे पहले बताया जाता है/ जबकि कहानी या उपन्यास में क्लाइमेक्स सबसे अंत में आता है। उलटा पिरामिड-शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता। उलटा पिरामिड शैली के तहत समाचार को तीन हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है-इंट्रो-बॉडी और समापन। समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में मुखड़ा भी कहते हैं। इसमें खबर के मूल तत्व को शुरू की दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अहम हिस्सा होता है। इसके बाद बॉडी में समाचार के विस्तृत ब्योरे को घटते हुए महत्त्वक्रम में लिखा जाता है। हालाँकि इस शैली में अलग से समापन जैसी कोई चीज़ नहीं होती और यहाँ तक कि प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ दी जा सकती हैं, अगर ज़रूरी हो तो समय और जगह की कमी को देखते हुए आखिरी कुछ लाइनों या पैराग्राफ़ को काटकर हटाया भी जा सकता है और उस स्थिति में खबर वहीं समाप्त हो जाती है। इसे उलटा पिरामिड इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना यानी क्लाइमेक्स´ पिरामिड के सबसे निचले हिस्से में नहीं होता बल्कि इस शैली में पिरामिड को उलट दिया जाता है। --- अथवा --- किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हट कर किया गया लेखन है। जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फिल्म, कृषि, कानून, विज्ञान और अन्य किसी भी मत्त्वपूर्ण विषय से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं। डेस्क:- समाचारपत्र, पत्रिकाओं, टीवी और रेडियो चैनलों में अलग-अलग विषयों पर विशेष लेखन के लिए निर्धारित स्थल को डेस्क कहते हैं। और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है। यथा, व्यापार तथा कारोबार के लिए अलग तथा खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क निर्धारित होता है। विशेष लेखन की भाषा-शैली:- विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से अलग होती है। इसमें संवाददाता को संबंधित विषय की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक होता है, साथ ही यह भी आवश्यक होता है कि वह पाठकों को उस शब्दावली से परिचित कराए जिससे पाठक रिपोर्ट को समझ सकें। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। विशेष लेखन के क्षेत्र:- विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र होते हैं, यथा- अर्थ-व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण-शिक्षा, स्वास्थ्य, फ़िल्म-मनोरंजन, अपराध, कानून व सामाजिक मुद्दे आदि।	
(ii)	स्तंभ लेखन विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने की ज़िम्मेदारी	2

	दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि स्तंभ अपने लेखकों के नाम पर जाने और पसंद किए जाते हैं। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि अखबार उनके कारण भी पहचाने जाते हैं, लेकिन नए लेखकों को स्तंभ लेखन का मौका नहीं मिलता है। -- अथवा -- फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उसका मनोरंजन करना होता है। इसकी भाषा सरल, आकर्षक व मन को छूने वाली होनी चाहिए। ***1.*** फीचर एक विशेष वर्ग व विचारधारा पर केंद्रित रहते हुए विशिष्ट शैली में लिखा जाता है। ***2.*** एक समाचार हर एक पत्र में एक ही स्वरूप में रहता है परंतु एक ही विषय पर फीचर अलग-अलग प्रस्तुति लिए होते हैं। ***3.*** फीचर में अतिरिक्त साज-सज्जा तथ्यों और कल्पना का रोचक मिश्रण रहता है। ***4.*** फोटो की प्रस्तुति से फीचर अधिक प्रभावशाली बन जाता है। फीचर में आकड़े, कार्टून, चार्ट, नक्शे आदि का प्रयोग उसे रोचक बना देता है। फीचर लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक, होती है परंतु समाचार की भाषा में सपाटबयानी होती है/ फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती है/ये आमतौर पर ***250*** से लेकर ***500*** शब्दों में लिखे जाते हैं/इनकी शैली कथात्मक होती है/	
प्रश्न11.	प्रश्नों में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए:-	**3+3=6**
(i)	• लालिमायुक्त प्यारा सूर्योदय| • चारों ओर हरियाली| • नीले आसमान में उड़ते पक्षी| • नीला समुद्र और उसकी लहरें|	3
(ii)	• जीवन में छल-कपट नहीं होना| • वास्तविकता नहीं छिपना| • चालाक लोगों द्वारा अवसर और हक छिन लेना|	3
(iii)	• मानसिक स्थिति ठीक न होना| • बार-बार राम को याद करना| • राम की वस्तुओं को बार-बार आँखों से लगाना और बेचैन होना| • कभी बोलना कभी चुप हो जाना|	3
प्रश्न12.	प्रश्नों में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए:-	**2+2=4**

(i)	• कोयल और भौरें की आवाज से बेचैन होना| • विरह में आतुर होना| • आँख-कान बंद करना|	2
(ii)	• प्रकृति में हुए परिवर्तन से| • चिड़ियाँ के बोलने से| • कैलेंडर से| • पीले सूखे पत्ते पर पैर पड़ने से|	2
(iii)	• सत्य का स्थिर न होना| • सत्य की पहचान मुश्किल| • सत्य का प्रत्यक्ष नहीं होना आदि|	2
प्रश्न13.	प्रश्नों में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए:-	**3+3=6**
(i)	• घरेलू परिवेश के कारण| • पं केदारनाथ जी के पुस्तकालय से पुस्तक पढ़ना| • अपने पिता तथा उनके मित्र स्व. रामकृष्ण वर्मा के सानिध्य रहने के कारण|	3
(ii)	• विंहपुर बड़ी बहुरिया का मायका| • हरगोविन संवाद सुनाना नहीं चाहता| • संवाद सुनाने को लेकर असमंजस| • अपने गाँव की बदनामी से भयभीत|	3
(iii)	• गंगा और हर की पैड़ी ही आजीविका का साधन| • श्रद्धालू द्वारा गंगा में पैसा फेंकना| • गंगापुत्र द्वारा डूबकी लगाकर पैसा निकालना| • परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा रेजगारी देकर|	3
प्रश्न14.	प्रश्नों में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए:-	**2+2=4**
(i)	• प्राकृतिक आपदा में मनुष्य अस्थायी रूप से पलायन करता है| • औद्योगीकरण में स्थायी पलायन| • मनुष्य और प्रकृति का संबंध|	2
(ii)	• अपनी शांति के लिए| • उनसे कोई प्रश्न न पूछे| • वास्तविकता से अनभिज्ञ रहने के लिए|	2
(iii)	• बच्चे ने अपने मन की बात कही| • बच्चे की भावनाएं बची होने के कारण| • बच्चे द्वारा स्वयं का उत्तर देने के लिए|	2